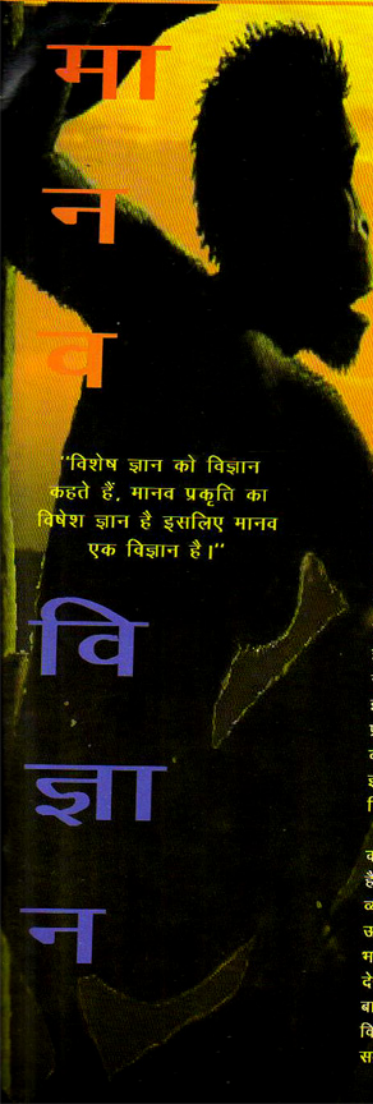

# मानव विज्ञान

"विशेष ज्ञान को विज्ञान कहते हैं, मानव प्रकृति का विषेश ज्ञान है इसलिए मानव एक विज्ञान है।"

जिस प्रकार दो तत्व के गुण को पहचान कर उसे मिलाने से तीसरे की उत्पत्ति हो जाती है, उसी प्रकर मानव द्वारा छोड़ा गया विचार विषयानुसार भाव व्यक्ति विशेष में पैदा करता है जिसके परिणामस्वरूप तीसरे की उत्पत्ति हो जाती है। जिसे व्यवहारिक गुणों के परिवर्तन में देखा जा सकता है। व्यक्ति जो देखता है उसकी आकर्षित आँख में बन जाती है ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आकृति आँख द्वारा छोड़े गये प्रकाश को रोक लेती है। और जब इस प्रकाश को निरन्तर रोक दिया जाता है तो जिस आकृति पर रूकता है उसके गुणों की जानकारी प्राप्त कर लेता है। ठीक इसी प्रकार जब व्यक्ति एक निश्चित आकृति को ईष्ट बनाकर निरन्तर उसे देखता है तो (अर्थात ध्यान करता है) तो वह आकृति तीसरे नेत्र पर बनने लगती है। जब यह आकृति इच्छा करते ही बन जाती है तब व्यक्ति एक विज्ञान हो जाता है उस समय जिस भाव के लिए ऊर्जा छोड़ता है भाव विषय को अवश्य पूरा करता हैं भाव ही मानव जीवन की सुगन्ध और दुर्गन्ध है। शुभ भाव (गुणत्मक इच्छाशक्ति) ईश्वरीय गुण को बढ़ाता है जो सत्य को पैदा करता है। इसकी सुगन्ध रोग दूर करने की औषधि बन जाती है। बुरा भाव (नकारात्मक इच्छाशक्ति) राक्षसी प्रवृत्ति को पैदा करता है। जो कार्य में रूकावट और रोग का कारण बन जाता है।

जब व्यक्ति विचार शून्य होकर बन्द आँखों से किसी आकृति को देखता है तब आकृति उसके तीसरे नेत्र पर बनती है। आकृति बनने के बाद जिस भाव के लिए ऊर्जा को रोका जाता है उस प्रकार की ऊर्जा आकृति से निकलती है। इस प्रकार निकली ऊर्जा में भाव को पूर्ण करने की शक्ति आ जाती है। भौगोलिक वातावरण में मिलते ही कार्य अवश्य पूरा होता हैं यह क्रिया सिर्फ–सिर्फ मानव विज्ञान से सम्भव है, किसी अन्य विज्ञान से नहीं हो सकता है। मानव की हर सोच का प्रभाव प्रकृति पर पड़ता है अर्थात मानव की हर इच्छाशक्ति की क्रिया होती है। तीव्र इच्छाशक्ति तात्कालिक परिणाम देती है। साधारण इच्छाशक्ति परिणाम देर से पैदा करती है। पर व्यर्थ नहीं जाती है। ईष्ट की आकृति से छोड़ी गयी ऊर्जा उद्देश्य को तुरन्त पूरा करती है। इस प्रकार कोई व्यक्ति शुभ इच्छाशक्ति धारण करके किसी की भी बीमारी को दूर कर सकता है। और किसी कार्य में आ रही बाधा को भी हटा सकता है। अपनी इच्छाशक्ति से मानव प्रकृति को भी सजा सकता है। अपने मूल्यों की रक्षा के लिए ही प्रकृति मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी के रूप में पैदा करती है।

मानव दृष्टा भी है और कर्ता भी। जब मानव विचार छोड़ता है तो कर्ता हो जाता है। और जब विचार शून्य होकर देखता है तो दृष्टा बन जाता है। भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों गुण की ऊर्जा प्रकृति में हमेशा मौजद रहती है। व्यक्ति जिस भाव के लिए विचार शून्य होकर दृष्टा बनता है उस प्रकार की ऊर्जा उसके तीसरे नेत्र पर उसकी आकृति बन जाती है इसी आकृति में भावनात्मक घटना को देखा जा सकता है। व्यक्ति अपने ईष्ट को निरन्तर देखने के अभ्यास से इस कला को जान सकता हैं इस कला को जान लेने के बाद व्यक्ति किसी भी घटना को कभी देख सकता है। इस प्रकार व्यक्ति एक विज्ञान है और इस कला को जान लेने के बाद एक सफल वैज्ञानिक बन सकता है।